धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

सितम्बर - 2012

* हम कैसे प्रचारक चाहते हैं
* नीच असरों का बोध
* सुन्दर झलकियां
* आलू में बड़े-बड़े गुण
* पुरोहिताई (प्रीसटहुड) क्या है?
* तो फिर हम क्या करें
* शोक समाचार
* माता-पिता दिवस
* सुशील जी चल बसे
* बचें गुस्से के दुष्प्रभाव से

हम कैसे प्रचारक चाहते है

हम ऐसे प्रचारक चाहते हैं, जो केवल सभाएं कराकर या इर्द गिर्द के नाना गावों में दौरा करके ही तसल्ली न पा लेते हों, बल्कि वह अपनी ज़िन्दगी से कोई उच्च फल पैदा करते हों जैसे भाई तख़्तसिंह जी ने यह ब्रत लिया था कि मैं जब तक पचास हजार रूपए दान मे एंकत्र न कर लूंगा, तब तक वापिस न आऊंगा। एक स्त्री ने भी यह ब्रत लिया था कि मैं जब तक पचास हजार रूपए एकत्र न कर लूंगी, तब तक वापिस न आऊंगी। इसी प्रकार तुम्हारे सामने भी कोई उच्च लक्ष्य होना चाहिए कि जब तक मैं इतना काम न कर लूंगा, तब तक चैन न पाऊंगा। इसमें जो तकलीफ़ आवे, उस को बरदाशत करना चाहिए। अपने आप को असहाय, अंधकारग्रसत, दुर्बल और तुच्छ समझ कर सच्चे और सरल भाव से देवात्मा से देव ज्योति और देव तेज की प्राप्ति के लिए सहाय प्रार्थना करनी चाहिए। यदि दिल श्रद्धावान होगा और तुम्हारी प्रार्थना भी सच्ची होगी तो सहायता मिलेगी। ऐसी सहायता मिलने पर जो फिर एक और कठिनाई साधारणत: खड़ी हो जाती है वह यह कि जब इस प्रकार की सहायता मिलने से कोई उच्च फल पैदा हो जाता है, तब वह प्रचारक उस फल को अपने साथ संबंधित करके फूलने वा अकड़ने लगता है और घमंड के महा नीच भाव से भर जाता है। वह झूठ मूठ यह अनुभव करने लगता है कि यह काम मैंने किया है, जब कि सत्य यह है कि वह काम उस की शक्ति से नहीं हुआ। यदि उस की ताकत से हुआ होता, तो चन्द दिन पहले वह क्यों न हो गया होता? ऐसे घमंड भाव से बहुत बचने और चौकस रहने की आवश्यकता है। जब दिल पर घमंड का भूत सवार होता है, तब ही देव तेज के पहुंचने के सब दरवाज़े बंद हो जाते हैं। इसलिए देव ज्योति और देव तेज के द्वारा जो उच्च फल पैदा होते हैं, वह फल पैदा होने से रह जाते हैं। सदा दीन भावी और श्रद्धावान बने रहने का संग्राम करो और घमंड भाव से डरो। जब किसी आत्मा का हृदय घमंड से भर जाता है, तब उस में ज्योति पहुंचनी बंद हो जाती है।

तुम्हारे सामने पहले यह लक्ष्य हो कि मैंने यह भला नतीजा पैदा करके छोड़ना है और फिर उसके लिए सब प्रकार का आवश्यक त्याग और समर्पण किया जावे, तब अवश्य जहां तक संभव है कामयाबी होगी। दूसरी बात जिसकी नितान्त आवश्यकता है, वह यह कि निज के साधन सच्चे साधन हों और उनमें दिनों दिन अधिक से अधिक बेहतरी आवे। केवल कुछ पाठ विचार करके और महिमा स्मरण का साधन करके सन्तुष्ट न रहना चाहिए, बल्कि सच्चे मोक्ष और विकास विषयक साधनों का क्रम चलने की आवश्यकता है। जब तक यह सिलसिला ठीक न चलेगा, तब तक हृदय शुद्ध नहीं होगा और भलाई का रास्ता नहीं खुलेगा। किसी अपराध को स्वीकार कर लेना और बात है और उसका सच्चा परिशोध करना और बात है। मेरी ऐसी आकांक्षा है कि तुम्हारे ऐसे मोक्ष और विकास विषयक सच्चे साधन चले सकें, ताकि तुम्हारी आत्मिक सच्ची भलाई का पथ खुल सके ओर तुम यहां पर अपने स्थूल शरीर को छोड़ने के अनन्तर उच्च लोकों में प्रवेश करने के अधि कारी बन सको। जैसे जिसके सचमुच की आंख नहीं है, वह यदि बनावटी आंख लगा लेवे, तब इससे देखने का काम नहीं हो सकता। वैसे ही यदि कोई जन अपनी नीच शक्तियों को छिपाए रखने का संग्राम करे, तो वह इसके बुरे फलों से बच नहीं सकता। इसलिए नितान्त आवश्यक है कि तुम्हारे मोक्ष विषयक सच्चे साधन चलें और उनके द्वारा तुम्हारी भलाई का क्रम आरम्भ हो।

(देवात्मा)

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 9

सितम्बर – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नीच असरों का बोध

देव धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जो विज्ञान मूलक है। इसमें विज्ञान का पूरा मान सम्मान है। देव धर्म की सारी शिक्षा नेचर के अटल नियमों और नेचर में होने वाली घटनाओं पर आधारित है। विज्ञान की रोशनी के बिना देव धर्म एक कदम भी नहीं चलता।

नेचर की यह अटल सचाई है कि नेचर का प्रत्येक जानदार वा बेजान अस्तित्व असर छोड़ता है। नेचर के सब पदार्थो वा शक्ति के अपने असर हैं, जो धुएं की तरह निकलते रहते हैं, यह असर अपनी अलग अलग तासीर रखते हैं। जैसे आक्सीजन भरपूर हवा सेहत बख़्श है और कार्बन डायकसाईड जानलेवा है, उसी प्रकार असर उच्च वा नीच होते हैं।

देव समाज में शामिल होकर, लगभग सब मनुष्यों को जल्दी ही अच्छे बुरे असरों का मान्सिक ज्ञान हो जाता है। अक्ल से असरों की जानकारी हो जाती है। परन्तु इससे असरों का बोध नहीं होता। असरों का बोध, होश या पूरी उपलब्धि नहीं होती। असरों का बोध होना तब समझा जाता है, जैसे हम दूर से बस या ट्रक को आते देखकर परे हट जाते है, उसके असरों से दूर भागते हैं, उसी प्रकार बुरे असर हमें दूर से दिखाई देने लग जाते हैं और उनमें विचरने से भय खाकर, वहां से परे हो जाते हैं। जैसे सड़ांद और बदबू से हम दूर भागते हैं, नाक, मुंह बंद कर लेते हैं उसी प्रकार बुरे असरों से भी दूर भागते हैं, यदि हम ऐसा नहीं करते, जैसा कि हम आम सेवकों, कर्मचारियों तक को ऐसा बोध नहीं होता, महसूस ही नहीं होता, तो हम उपरोक्त प्रकार की प्रतिक्रिया भी व्यक्त नहीं करते।

एक बहुत योग्य, बुद्धिमान, सांईस ग्रेजुएट, जो समाज की शिक्षा बहुत अच्छी तरह समझते थे, उच्च कोटि के सेवक थे, वह अकसर गांव की चौपाल में बैठकर ताश वा शतरंज जिसको पासा कहते हैं, आम ग्रामीणों के साथ बैठकर खेलते रहते। ग्रामीण लोग गालियां भी निकालते, बुरे बोल बोलते रहते। उनमें बैठना वा खेलना उन्हें कुछ बुरा बोध नहीं होता था, बल्कि सुहावना वा मनोरंजक लगता था। यह क्रिया बताती है कि उस समय उन्हें असरों का कुछ बोध नही था। उन पर उनके आत्मा

के लिए घातक असर पड़ रहे हैं, इसका ज्ञान नहीं था।

इसी प्रकार धन अनुरागियों की संगत में बैठकर धन की चिन्ताएं वा मन्सूबे बनने लाज़मी हैं। स्वाद अनुरागियों की संगत में बदपरहेज़ बनने में देर नहीं लगती। काम अनुराग सम्बन्धी बात चीत सुनने से सुनने वाला भी पतित हो जाता है। मनुष्य को कुछ ज्ञान नहीं होता और असर चुपचाप रंग दिखाते हैं।

इसके उल्ट परोपकारी जनों के पास बैठने से स्वार्थ से निकलने की प्रेरणाएं मिलती है। स्वास्थ्य के विषय में ज्ञान के प्रभाव आपको भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हैं। इस प्रकार अच्छे और बुरे प्रभाव जाने अनजाने आपको प्रभावित करते रहते हैं।

ज्ञान केवल जानकारी देता है, प्रेरक या चालक नहीं होता। जब हमारा ज्ञान वा सोझी हमें चलाती है, प्रेरणा देती है, तब बोध पैदा होता है।

परम पू० भगवान सर्वोच्च बोधों के स्वामी हैं। उन्होंने नेचर के भीतर अति सूक्ष्म और विशाल खेल को होते खूब देखा है और अधिकारी आत्माओं को दिखाने का प्रबल संग्राम किया है ताकि अधिकारी रूहें नीच असरों की भयानक हानि से बच सकें और उच्च असरों में रह सकें।

गुरू महाराज का सारा कारज उनके अद्वितीय असरों को लेकर ही है, उनके अद्भुत और शक्तिशाली ज्योति वा तेज से भरपूर देव असरों तक अधिक से अधिक रसाई हासिल करना, किसी भी मनुष्य का सबसे उत्तम वा महान सौभाग्य है, असर, नीच असर, उच्च असर और देव असर भगवान की शिक्षा और रूहों के उच्च परिवर्तन के कार्य के धुरे हैं।

<u>दुर्जन वास न करो, दुर्जन वास से निर्जन वास उत्तम है</u> :

परम पू० भगवान देवात्मा चाहते थे कि उच्च जीवन या धर्म जीवन की प्राप्ति के सच्चे इच्छुक सेवक वा कर्मचारी सदा नीच संगत, नीच जनों वा नीच असरों से उसी प्रकार भय खाएं, जैसे तीर से कौआ डरता है। परन्तु हम उच्च असरों के अबोधी, गुरू महाराज के फरमान या उनकी हमारे भले की इच्छा का अपनी अबोधता के कारण साथ नहीं दे सकते, हम सदा हानि की ओर बेझिझक जाकर हानि वा दुख ही उठाते हैं।

बहुत सम्मान के योग्य श्रीमती सुशीला देवी जी, भगवान के मिशन की बहुत उच्च कोटि की कर्मचारी हो चुकी हैं। उन्होंने पू० भगवान की देव बाणी के नोट नामक पुस्तक में उनकी देव वाणी को लिपिबद्ध किया है। वह बहुत समय गुरू महाराज के चरणों में रहती रही। कई बार सोलन से आते जाते जब रेलगाड़ी भटिंडे में से गुजरती, तो अकसर रास्ते में वह अपने बहन भाईयों को मिलने के लिए गुरू महाराज से छुटटी के लिए निवेदन करती, जो अकसर गुरू महाराज अपने दिल पर पत्थर रखकर दे देते थे। इस सम्बन्ध में "देव बाणी के नोट" पुस्तक में इस प्रकार लिखा हुआ है:-

"तुम ऐसे जनों के पास जाना चाहती हो, जो तुम पर बुरे प्रभाव पाएंगे। दो दिन उनके पास रहोगी, उस वातावरण में सांस लोगी तो अप्रत्यक्ष तौर पर उनके नीच प्रभाव जज़ब करके आ जाओगी। इसलिए हम तुम्हारा वहां जाना मुनासिब नहीं समझते"।

अपने घर मं एक सम्बन्धी की बिमारी का

पता लगने पर वापिस लहौर जाते हुए रास्ते में घर जाने की अनुमति के लिए श्रीमती जी ने निवेदन किया तो देवात्मा सत्गुरू ने फरमाया: -

"तुम चूंकि अपने सम्बन्धियों को मिलने की अकांक्षा रखती हो, इसलिए हमने मन्जूर कर लिया है, परन्तु हम आपका वहां जाना पसन्द नहीं करते। जैसे गुलाब के फूलों से खुशबू का आना ओर गंदगी के ढेर से बदबू का आना एक अवश्यक बात है, इसमें किसी के चाहने या न चाहने की कोई बात नहीं, इस प्रकार जैसे तुम यहां के उच्च प्रभावों को छोड़कर नीच और महा हानिकारक प्रभावों में सांस लोगी, पता नहीं कितनी हानि वा नुकसान उठाकर वापिस आओगी। तुम्हारे सम्बन्धी तो उच्च असरों से कटकर और नीच असरों में नष्ट हो रहे हैं, अब हम चाहते हैं कि अब यदि उनमें से किसी का बचना सम्भव नहीं रहा, तो कम से कम तुम तो बच जाओ, इसलिए हम तो तुम्हें चन्द मिन्टों के लिए भी भेजना पसन्द नहीं करते"।

(जुलाई 1918)

उच्च लोक वासी माननिय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी का देव समाज के इतिहास में विशेष स्थान हैं। उन्होंने 10 - 11 वर्ष गुरू महाराज के हजूर में रात दिन रहकर, उनकी निजी सेवा और घोड़ा बग्गी की सेवा का सोभाग्य प्राप्त किया उनके जीवन की बहुत ज़बरदस्त घटनाएं हैं। यहां एक विशेष घटना का वर्णन करते हैं: -

माननिय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी गुरू महाराज की सेवा में विराजमान थे, जब उन्हें उनके पिता जी की मृत्यु का संदेश मिला। गुरू महाराज जी ने उन्हें वहां जाने की आज्ञा दे दी। श्रीमान जी ने झट जाने की तैय्यारी कर ली और जाते वक्त गुरू महाराज के हजूर में प्रणाम करने के लिए हाज़िर हुए। गुरू महाराज को उनका उच्च वातावरण को छोड़कर उस रोने धोने के दुखदाई वातावरण में जाना बहुत दुखदाई लग रहा था। जाने से पहले पू० भगवान ने कुछ इस तरह फरमाया :- गुरूवन्त सिंह जी, आप पिता की मौत पर जा रहे हो, हमने भी आपको छुटटी दे दी है। परन्तु यदि हम आपकी तरह अपने गुरू की सेवा में होते और हमारे पिता जी का देहान्त हो जाता, हम वहां जाकर कुछ भला कर भी नही सकते, यह पता होता, हम कभी अपने गुरू की संगत छोड़कर न जाते। आपके पिता का देहान्त हो गया है, अब वहां जाकर रोने धोने के सिवा और परिवारिक जनों को मिलने के सिवा तुम कुछ नहीं कर सकोगे। उस समय पू० भगवान को जो नीच असरों की भयानकता का बोध था, वह श्रीमान जी को बिल्कुल नहीं था। वह सोच भी नहीं सकते थे कि अब वहां जाना अकारथ है। गुरू महाराज के फरमाने पर उन्हें झट रोशनी और बल प्राप्त हो गया, गुरू इच्छा को जानकर उन्हें अपना इरादा बदल दिया, फिर वह गुरू दरबार छोड़ कर नहीं गए। दुनियवी सम्बन्धियों वा उनकी इच्छा को मुख्य नहीं रखा, वाह! धन्य हैं ऐसे गुरू और महा सौभागयवान है ऐसे सेवक, जिन्होंने गुरू सेवा का तप कमाया और नीच असरों से बचे रहने का पाठ सदा के लिए पक्का कर लिया।

दूसरी ओर जब श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी के पिता बिमार थे, तो पू० भगवान ने ज़ोर देकर उनकी सेवा के लिए भेजा। पिता उनके समाज में आने के कारण श्रीमान जी से नाराज़ थे, उन्होंने

सेवा लेने से इन्कार कर दिया और श्रीमान जी वापिस आ गए, परन्तु गुरू महाराज ने फिर उन्हें भेजा और फिर उन्होंने अपने पिता की खूब सेवा की। धन्य हैं ऐसे हितकर्ता।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को देव असरों के वातावरण का बोध था। उन्होंने ही कहा था कि इस वातावरण से बाहर सारी दुनियां अन्धेर यानि तीरो तार नज़र आती हैं

एक बार पू० भगवान ने 31 मार्च 1915 को विकासाल्य की संगत खत्म होने पर फरमाया था :-

"अब विकासालय का सैशन ख़त्म हो रहा है, यह विचार करने की बात है कि बाहर जाकर आप लोग क्या करोगे। पहली बात तो यह कि आप बुरे असरों से कैसे बचोगे? यदि तुम्हारे भीतर नीच आत्माओं के लिए आकर्षण है, उनके प्रति कुछ विकर्षण महसूस नहीं होता, तब तुम्हारा नीचे जाना अवश्यम्भावी है। आप किस की संगत करोगे, किसी स्त्री पुरूष आदि की, जो अपने अन्दर से बुरे असर निकाल रहे हैं, यदि तुम बुरे असर ग्रहण करने की योग्यता रखते हो, तो उनके बुरे असर ज़रूर ले लोगे। एक 2 जन को यह सोचने की अवश्यकता है कि मैं जो विकासालय के सैशन के समाप्त होने पर जा रहा हूं, मैं किस लिए जा रहा हूं? किस को अपने पास बैठने देता हूं? किस बात के लिए बैठने देता हूं? यदि कुछ ज्योति तुम्हें मिली हो, तो तुम देख सकोगे कि मेरे गुरू तो देवात्मा होकर भी किसी से इस प्रकार नहीं मिलते बैठते। आपके अन्दर यह भाव हो कि किसी को मिलना है, तो उसको उच्च बनाएं। चुपचाप बैठकर उसके नीच असर ग्रहण नहीं करने। यह असूल समझ लो। किसी के बहकाने पर मत बहको। इसी असूल की पैरवी करो। ऐसा न हो कि आप अन्धे होकर देवात्मा के जीवन को ही घृणा की दृष्टि से देखने लग जाओ। ऐसा करके तुम अवश्य नष्ट हो जाओगे।"

(बलदेव सिंह)

याद रखने योग्य कुछ और सूत्र

1) प्रजा या जनता ही शासक का चयन करती है। आप जैसा शासक चुनेंगे-प्रजा पर भी वैसा ही उसका प्रभाव होगा (यथा राजा तथा प्रजा)।

2) जिनका आचरण अनुचित रहा है, उन्हें आप सबक सिखावें यही धर्म है। यही कर्तव्य है।

3) आप चरित्रवान-आचारवान-सत्यवादी- कर्मठ व्यक्ति चुनेंगे तो देश और समाज का कल्याण होगा और आपको सन्तोष होगा।

4) मनुष्य का मन कोमलता से झुक आता है किन्तु शक्ति का प्रतिरोध करता है।

5) जीवन को रूपान्तरित करने से ही जीवन का विकास हो सकता है। सोने के पुराने आभूषणों की गलाई व ढलाई से ही नये आभूषण बन सकते हैं। इसी प्रकार जीवन का विकास तभी हो सकता है जब हम अपने जीवन की गतिविधियों में आमूल चूक परिर्वतन कर लें।

सुन्दर झलकियां

श्रीमान पी०वी कनल जी और श्रीमान ईश्वर सिंह जी दोनों ही देव समाज कौंसिल के मैंम्बर थे। इनके अतिरिक्त और भी कई मैम्बर थे। एक दिन कौंसिल की मीटिंग में किसी विषय पर फैसला करते हुए दोनों में मतभेद हो गया। श्रीमान् कनल जी कुछ ज़ोर-ज़ोर से बोल गए और श्रीमान् ईश्वर सिंह जी के सम्बन्ध में कुछ ऐसे शब्द कह गए जो नहीं कहने चाहिए थे। कुछ समय के बाद श्रीमान कनल जी ने महसूस किया कि मुझ से बड़ी भारी गलती हो गई। मुझे अपनी सही बात भी सम्मान-पूर्वक विनम्र शब्दों में कहनी चाहिए थी। मैं अपने एक त्यागी, सेवाकारी साथी कर्मचारी के सम्बन्ध में जो ऊंचा बोल गया, वह मेरा व्यवहार ठीक नहीं था। उन्होंने फौरन श्रीमान हितैषी सिंह जी को कहा-कृपया जाओ, देखकर आओ, श्रीमान जी अपने कमरे में हैं या नहीं। श्रीमान हितैषी सिंह जी गए और वापस आकर बताया कि कुछ देर पहले वह मोगा जाने के लिए बस अड्डा चले गए हैं। श्रीमान कनल जी ने फौरन सवारी का प्रबन्ध किया और बस अड्डे पहुंच गए, जहां श्रीमान ईश्वर सिंह जी बस की प्रतीक्षा कर रहे थे। श्रीमान कनल जी ने भरे दिल और तर आंखों के साथ अपनी गलती का प्रकाश करके क्षमा मांगी। दोनों कर्मचारी एक दूसरे के गले से लिपट गए। दोनों ही ज़ार-ज़ार रो रहे थे। आस-पास खड़े लोग इस दृश्य को देख कर हैरान हो रहे थे कि दो बजुर्ग सज्जन किस प्रकार एक दूसरे से गले लग कर रो रहे हैं। उस समय का दृश्य देवताओं के देखने के योग्य था। जब इस घटना की याद आती है तो महसूस होता है कि दोनों उच्च आत्माओं का किसी विषय पर मतभेद होते हुए भी मतभेद नहीं हुआ। आलोचना वा निन्दा की कैंची ने परस्पर सम्बन्ध को काटने का काम छोड़कर गुण-चिन्तन और हानि-परिशोध की सूई ने फटे दिलों को (सीने) जोड़ने का काम किया।

श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी देव समाज के कर्मचारी थे। उन्होंने श्रीमान नौध सिंह जी जैसे वाममार्गी तक भगवान देवात्मा के देव प्रभाव पहुंचा कर उन्हें फरिश्ता इनसान बना दिया। फाजिलका उनका कार्य-क्षेत्र था। वहां पर श्रीमान बाबू अमर नाथ जी एडवोकेट भी रहते थे। उक्त श्रीमान जी प्रचार के सिलसिले में उनके घर गए। सख़्त गर्मी का मौसम था। बाबू अमर नाथ जी ने श्रीमान जी का हृदय-गत भावों से स्वागत किया। उन्हें बैठाया और ठण्डा पानी पीने के लिए पेश किया। अभी श्रीमान जी ने पानी पिया भी नहीं था कि उन्हें पता लगा कि उनके किसी व्यवहार से पड़ोस में रह रहे एक सेवक डाक्टर हरदयाल राय जी बहुत दुखी हैं। श्रीमान जी ने महसूस किया कि डाक्टर साहब की आत्मिक अवस्था ठीक नहीं है। वह आत्मिक विचार से बहुत अधिक बीमार हैं। जैसे कोई अपने किसी सम्बन्धी की शरीर के विचार से बहुत रोगी अवस्था को देख कर तड़प उठता है, वैसे ही श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी आत्मा के विचार से एक सेवक को रोगी देखकर तड़प उठे। उन्होंने पानी का गिलास मेज पर रख दिया और कहा कि मैं पहले उनके घर जाता हूं। वह डाक्टर साहब के घर गए और उनसे कहा कि जरूर मुझसे कोई गलती या गलतियां हुई होंगी जिसके कारण आप मुझ से दुखी हैं। उनका दिल भरा हुआ था। उन्होंने बहुत दीन-भावी होकर डाक्टर साहब से क्षमा मांगी और अपनी पगड़ी उनके पैरों में रख दी और कहा कि गुरू महाराज ने मुझे आप लोगों की आत्मिक सेवा करने की जिम्मेदारी बख्शी है न कि आप लोगों पर हकूमत

करने की। श्रीमान जी का इतना कहना था कि डाक्टर हरदयाल राय जी का दिल पिघल गया और उनके दिल में जो रंजिश थी वह दूर हो गई।

श्रीमान बख्शी रत्न चन्द जी जौहर देवरत्न के जाने के बाद देव समाज के सैक्रेट्री बनाए गए। पूजनीय भगवान ने उनके सम्बन्ध में फ़रमाया था, कि बख्शी जी अच्छे सैक्रेट्री हैं, अच्छे एकाऊन्टैन्ट हैं, अच्छे चिकित्सक हैं इत्यादि। वह कई वर्ष समाज के सैक्रेटी रहे। वह मोगा विकासालय के अधिवेशन में लाहौर से आया करते थे। पाकिस्तान बनने के बाद वह मोगा में रहने लग गए थे। मोगा में धर्म विकासालय के छोटे साधन मन्दिर में कर्मचारियों की विशेष सभाएं हुआ करती थीं, जिन में कर्मचारी अपने अपने निज के साधन का हाल बताया करते थे। एक दिन का ज़िक्र है कि बख्शी रतन चन्द जी ने अपने साधन का हाल बताते हुए कहा कि भगवान का कार्य करने के लिए जैसी योग्यता रखने वाले आत्माओं की आवश्यकता है, उस योग्यता की मुझ में बहुत कमी है। बल्कि मैं तो यह महसूस करता हूं कि मैं और मेरे जैसे कई आत्मा भगवान देवात्मा और अधिकारी आत्माओं के बीच में पहाड़ बन कर खड़े हुए हैं। हमारी कमियों और कमजोरियों को देख कर बहुत से जन भगवान के कारज से दूर हो जाते हैं परन्तु निकट नहीं होते। यह बयान करते हुए बख्शी जी का दिल भरा हुआ था, उनकी आंखों से आसूं बह रहे थे और उन्होंने दुखी होकर अपने मुँह पर ज़ोर ज़ोर से थप्पड़ मारने शुरू किए। उस समय कौन सा ऐसा आत्मा होगा जिसने यह महसूस न किया हो कि वास्तव में ही हमारी अयोग्यता के कारण ही अधिकारी आत्मा भगवान देवात्मा के कारज की ओर खिंच कर नहीं चले आते।

श्रीमति सरस्वती कनल ब्राह्मण वंश की थी परन्तु भाटिया खानदान में उन्होंने विवाह किया। शादी भी तब की, जब तारा डुबा हुआ था। जब श्रीमति जी के पिता का देहान्त हुआ तो उन्होंने मृतक संस्कार देव समाज विधि से कराया। इस पर बिरादरी के लोग बिगड़ गए। उनके धर्म पति श्रीमान कनल जी की सैंकड़ों रूपये माहवारी की आमदनी वकालत में होती थी। परन्तु श्रीमति जी ने कहा कि हमें भगवान के कारज में लगना चाहिए। कनल जी कुछ ढीले थे। एक दिन जब वह कचहरी से वापस घर आए तो देखा कि श्रीमती जी ने सामान बांध कर रखा हुआ है और लाहौर चलने की तैयारी की हुई है, जहां श्री देवगुरू भगवान रहते थे। सन् 1918 में कनल जी लाहौर पहुंच गए। श्रीमति जी ने पहले लाहौर में दान मांगना शुरू किया। फिर सन 1920 में वह बम्बई दान मांगने गई और एक नया क्षेत्र बना दिया।

सन् 1921 में पहली अगस्त को श्रीमति जी के बच्चा पैदा हुआ। जब अक्तूबर में वह दान के लिए बम्बई को रवाना होने लगीं, तो भगवान ने फ़रमाया कि बम्बई में बच्चे को यदि कुछ हो गया तो? श्रीमती जी ने उत्तर दिया कि इसकी परवाह नहीं, सेवा का काम अवश्य होना चाहिए। बम्बई में बच्चा सख्त बीमार हो गया, परन्तु राजी हो गया और वह कुशल पूर्वक वापस आ गई। सन् 1937 में जब वह बम्बई में दान का काम कर रही थी तो वहां उनकी दूसरी कन्या पैदा हुई। भाई अमर सिंह जी उनकी मदद के लिए बम्बई ठहरे। सन् 1941 में उनकी तीसरी बेटी सुषमा फिरोजपुर में बीमार थी। उसको साथ लेकर वह दान के लिए बम्बई गई। बीमार कन्या को भी सम्भालती और दान भी मांगती। वहां एक दिन बारह बजे कन्या की मृत्यु हो गई। उसका संस्कार करके तीन बजे श्रीमती

जी दान मांगने चल पड़ी, जब बम्बई से पंजाब आने लगीं तो उस समय का दृश्य बड़ा दर्दनाक था। वह अपनी कन्या को बम्बई छोड़ कर पंजाब जा रही थीं।

31 मई सन् 1933 को उनका होनहार बहुत सुन्दर बेटा जो बी०ए० फाइनल में पढ़ रहा था, बीस वर्ष की आयु में गुज़र गया परन्तु इस सदमे के बाद भी वह बम्बई में दान मांगने गई। वहां से कराची गई और 15 दिन वहां दान मांगा। तीस बरस उन्होंने समाज के हितकर काम के लिए हजारों रूपए दान मांगने का संग्राम किया और कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी हिम्मत नहीं हारी।

कैसी सुन्दर झलकियां!

आलू में बड़े-बड़े गुण

यकीनन शीर्षक पढ़कर आप भी चौंक गए होंगे। आखिर बचपन से यह जो सुनते आए है कि आलू बुराइयों की खान है, सेहत का दुश्मन है, इसमें कार्बोहाइड्रेट के अलावा कुछ नहीं होता, यह मोटापा बढ़ाता है वगैरह। लेकिन कोई आपसे कहे कि आलू में उतने विटामिन, खनिज और पोषक तत्व होते हैं जितने कई बेहतरीन पोषक माने जाने वाले फलों में मिलाकर भी नहीं होते, आप ये जानकर सुखद आश्चर्य से भर उठेंगे।

आलू की खासियत :- बिटेन के मशहूर पोषणशास्त्री सिग्रिड गिब्सन के मुताबिक आलू में नासपाती, केले, चुकंदर, अखरोट, फूल गोभी आदि से आधिक पोषक तत्व होते हैं। यही वजह है कि उन्होंने आलू को 'वंडरफूड' की उपाधि दे डाली है। उनके मुताबिक मध्यम आंच पर पके एक आलू में एक केले के मुकाबले साढ़े पांच गुना तक अधिक फाइबर होते हैं। उसमें तीन नासपातियों से भी अधिक विटामिन सी होता है। आलू में अन्य फलों सब्जियों के मुकाबले अधिक मिनरल सेलेनियम होता है जो प्रोटीन के साथ मिलकर एंटीऑक्सीडेंट एंजाइम बनाता है। ये एंजाइम विभिन्न बीमारियों से रक्षा करते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया कि आलू खाने से वजन तो नहीं बढ़ता उलटे रक्तचाप की शिकायत जरूर कम हो जाती है। सर्वेक्षण में गिब्सन ने 876 बच्चों और 948 वयस्कों के खाने पीने के रिकॉर्ड की जांच की। ये सारे बच्चे ब्रिटेन के राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण में शामिल रहे थे।

गिब्सन के मुताबिक, 'फूलगोभी में काफी मात्रा में विटामिन बी-9 होता है लेकिन हमारे अध्ययन से पता चला कि आलू मे इसकी मात्रा उससे भी ज्यादा होती है। इसके अलावा इसमें लौह और मैग्नीशियम जैसे खनिज भी होते हैं जो बच्चों की सेहत के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इसी तरह हम सोचते थे कि केले पोटोशियम का अच्छा स्त्रोत हैं, वे हैं भी, लेकिन आलू के मुकाबले उनका दावा कमजोर है।'

सब्जियों का राजा :- आलू में यह खूबी होती है कि उसके किसी भी दूसरी सब्जी के साथ मिलाकर बनाया जा सकता है। उसकी इसी खासियत के चलते उसे सब्जियों का राजा तक कहा जाता है।

आलू का इतिहास :- आलू का नाम (पोटेटो) स्पेनिश भाषा के दो शब्दों बाटा औा पापा से मिलकर बना है। इस शब्द का पहली बार इस्तेमाल करीब 1400 में किया गया। पहली बार आलू का इस्तेमाल तकरीबन 8000 से 5000 ई० पूर्व पेरू और बोलीविया में हुआ। 17वीं सदी में यह पूर्वी एशिया में पहुंचा और बहुत जल्द चीन के शाही परिवार का प्रिय हो गया। भारत में भी यह लगभग उसी समय आया।

पुरोहिताई (प्रीसटहुड) क्या है?

भगवान देवात्मा ने 14 जनवरी 1919 ई० को कर्मचारियों और सेवकों को अपने श्री चरणों में बुलाकर चार निहायत कल्याणकारी और शक्तिशाली उपदेश प्रदान किए।

1) पुराहिताई (प्रीसटहुड) क्या है? और वह धर्म को लेकर नाना देशों में कैसे पैदा हुई और वह कैसे कैसे महा भयानक फल पैदा कर रही है?

2) देवसमाज के भीतर इस भयानक रोग के घुसने की सम्भावना और उसके दूर करने के कार्यगत उपाय।

3) देवसमाज के प्रत्येक कर्मचारी और उप कर्मचारी के भीतर अन्य सेवकों के सम्बन्ध में किस किस प्रकार की योग्यताओं के पैदा होने की जरूरत है?

4) देवात्मा में सत्य और हित के सर्वांग अनुराग और असत्य और अहित के सम्बन्ध में सर्वांग वैराग भावों से क्या अभिप्राय है अर्थात उनकी यह देव शक्तियां क्या हैं, और उनका क्या कार्य है, कि जिन के विचार से उनका आर्विभाव मनुष्य में एक अद्वितीय आर्विभाव है।

पुरोहिताई के विषय में पूजनीय भगवान ने यह फरमाया कि यह पुरोहिताई किसी भी समाज के लिए बहुत भयानक चीज है, इसलिए वह देवसमाज के लिए भी भयानक चीज है, इसलिए वह इसे देवसमाज के अन्दर कदापि घुसने नहीं देगें। इस बुराई के प्रति वह,

1) देवसमाज का काम करने वालों में घृणा उत्पन्न करके उन्हें उससे चौकस रखकर,

2) साधारण सेवकों में उसकी बुराई का प्रचार करके और उनके भीतर भी उसका बोध पैदा करके, और

3) समाज की गठन में ऐसे नियम रखकर कि जो इस बुराई की जड़ काटने वाले हों, आदि।

ऐसे सब आवश्यक उपाय ग्रहण करेगें, कि जिन से यह सांघातिक प्लेग देवसमाज में न घुस सके और न बढ़ सके।

फिर देवसमाज के कर्मचारियों और उपकर्मचारियों में किस किस प्रकार की योग्यताओं के उत्पन्न होने की आवश्यकता है उसके विषय में जो बहुत सी ज़रूरी बातें पूजनीय भगवान ने ब्यान कीं, उनमें से कुछ यह हैं :-

1) वह धर्म प्रचार के प्रोग्राम के साथ-साथ अपने जीवन की नियमित प्रणाली अपने सामने रखते हों, और उसके अनुसार एक व दूसरी निम्न शक्ति के अनुचित अधिकार से उद्धार लाभ करने और एक वा दूसरा उच्च भाव उन्नत करने के लिए अपने जीवनदाता सत्य देव के देवरूप तक पहुँचने और उनके देव प्रभावों को लाभ करने की कुछ न कुछ योग्यता रखते हों, और उन प्रभावों को जहाँ तक सम्भव हो, अपनी योग्यता के अनुसार प्रतिदिन लाभ करने की चेष्टा करते हों।

2) वह अपने क्षेत्र के सेवकों और सेवकाओं को अपने साथ जोड़कर उनका और अपना आत्मिक नाश करने के स्थान में जीवनदाता सत्य देव के देवरूप के साथ जोड़ने और उनके साथ उनका आत्मिक सम्बन्ध पैदा करने और बढ़ाने वाले श्रद्धा, आकर्षण और कृतज्ञता आदि उच्च भावों में से किसी एक व कई के उत्पन्न व उन्नत करने की न्यूनाधिक योग्यता रखते हों।

3) वह अपने आत्मा को अपने जीवन दाता के देवरूप का आश्रित और उनके देवप्रभावों का सदा भिखारी और अपने मंडल व क्षेत्र के सेवकों व सेवकाओं का केवल आत्मिक सेवाकारी भृत्य अनुभव करते हों, और वहां के सेवकों और सेवकाओं के दुख सुख और उनकी एक व दूसरी विपद व उलझन में उनके लिए हमदर्दी का भाव रखते हों और न केवल उनमें से किसी को किन्तु उनके भिन्न किसी मनुष्य को कभी और किसी सूरत में घृणा न करते हों और किसी के सम्बन्ध में द्वेष व ईर्षा का भाव न रखते हों और उनके साथ अपनी तरफ से अपने दिल में सदा सद्भाव रखते हों और उन से फट न जाते हों, और उन्हें अपनी व अपने पारिवारिक जनों की एक व दूसरे प्रकार की वासनाओं की तृप्ति की सामग्री न समझते हों और न बनाते हों।

4) वह अपने मंडल व क्षेत्र के सेवकों व सेवकाओं की किसी क्रिया से - **यहां तक कि उनकी किसी अनुचित क्रिया से भी उनके दुश्मन न बन जाते हों, इत्यादि इत्यादि।**

(भगवान देवात्मा के
लेख और उपदेश, तीसरा भाग)

एक विचारणिय सत्य

हम यहां क्यों है और जीवन का लक्ष्य क्या है? हम संसार का मुख उज्जवल कर रहे हैं या उसके विनाश में सहायक हो रहे हैं। क्या हम अपनी अपेक्षा अभागे जनों की अपेक्षा कर रहे हैं? तुम और मैं या तो संसार के उत्थान में सहाय कर रहे हैं, यां उसे पतन की ओर घसीट रहे हैं। मेरी यह चिन्ता या क्रिया संसार को बेहतर करेगी या बदत्तर, या मेरे साथी मनुष्य के लिए सहायक होगी या बाधक, मेरे आत्मा की शक्ति मेरे साथियों की उन्नति में प्रयुक्त होगी यां अवनति में।

यदि यह विचार जीवन की केंद्रित शक्ति होता, तो नेचर के विकासकारी नियम के साथ एक हुए मनुष्य के भीतर से प्यार की धारा संसार में बह निकलती और संसार में उच्च एकता का वास होता। जो कोई भी इस दिशा की ओर मुख करता है, और अपने शरीर और अपने जीवन को पवित्र करता है, वह विश्व जीवन को संगठित करता है और विश्व में विकासकारी योगदान के द्वारा अपने आत्मा का भी विकास करता है।

(ऐनी बेसैंट)

तो फिर हम क्या करें

प्रश्न यह है कि क्या हमारा समाज वास्तव में एक रोगी समाज है? इतना रोगी कि उसके बचने की कोई आशा नहीं? किसी भी सुबह समाचार-पत्र को आप पढ़ें, तो जो बुराईयां प्रतिदिन अधिक - से-अधिक संख्या में हो रही हैं, उनको पढ़ कर आप का दिल दहल जाएगा। किसी जगह इकटठे भद्र जनों की बातें आप सुनें तो उनकी निराशाजनक और हतोत्साह बातों को सुन कर आप घबरा जाएंगे। आप महसूस करेंगे कि हमारे बीच कोई ईमानदार स्त्री पुरूष या बच्चा बचा नहीं है और हमारा समाजिक-जीवन जैसे बिल्कुल गल सड़ गया है।

हमारे राजनीतिज्ञ आया राम और गया राम बन रहे हैं। नौकरी-पेशा लोग अपने अफसरों की खुशी प्राप्त करने के लिए मानो अपने आत्मा को बेच चुके हैं। उनमें से बहुतों ने अपार धन संचय कर लिया है। हरेक आदमी की कीमत है, जिस पर वह खरीदा जा सकता है। श्री निराध चौधरी का कहना है कि हम एक प्रकार के ऐसे सूअर हैं कि जो गन्दगी के ढेर में अपने महान पूर्वजों, पवित्र नदियों और गौ-माता पर गर्व करते हैं।

इसके बावजूद हम जी रहे हैं। खाने को हमें अच्छा भोजन मिलता है। पहनने को अच्छे कपड़े मिलते हैं। रहने के लिए आलीशान मकान हैं और जीवन की अनेक सुख-सुविधाएं हमें प्राप्त हैं। हमारे कल-कारखाने खूब उत्पादन कर रहे हैं और हम एक स्वतन्त्र राष्ट्र हैं।

भविष्य के बारे में हमें आशावादी रहना चाहिए। अन्धेरे में कहीं-कहीं उजाले की किरण भी दिखाई पड़ती है। वीरता, त्याग और कर्तव्य-पालन की अनेक घटनाएं हमारे सामने होती रहती हें जिससे मानवता पर हमारा विश्वास कायम रहता है हमारे समाचार-पत्र अच्छी घटनाओं का कम ही जिकर करते हैं।

दिल्ली के एक कालिज के चार नवयुवक विद्यार्थियों ने अपनी जान का बहुत बड़ा खतरा मोल लेकर एक खूनी डाकू का अपनी मोटर कार द्वारा पीछा किया और उसको पकड़ लिया। जिस पुलिस के महकमे की हम बहुत आलोचना करते हैं, उसके एक अफसर ने राष्ट्रीय संग्रहालय की बहुत सी चोरी की हुई अमूल्य सामग्री व जवाहरात को अपनी बहादुरी और बुद्धिमत्ता से बरामद कर लिया। इस तरह एक ओर पुलिस के अफ़सर ने जयपुर महल के संग्रहालय की चुराई हुई बहुत सी पंटिंग्स को पालम हवाई अड्डे पर समगल किए जाने से बचा लिया।

हम से बहुत से लोग टैक्सी चलाने वालों की आलोचना व निन्दा करते हैं परन्तु एक टैक्सी चालक ने एक थैला जिस में चार हज़ार रूपये थे, थाने में जमा करा दिया। यह थैला कोई व्यक्ति उस की टैक्सी में भूल गया था। इस रुपये पर वह बड़े आराम से कब्जा कर सकता था। एक बड़े अफसर ने अपने विभाग के मंत्री को ठीक सलाह देने का हौसला किया हालांकि ऐसा करने से उसको बहुत झिड़किया खानी पड़ीं।

ग्यारह वर्ष के एक लड़के ने जमुना नदी में छलांग लगा दी और एक डूबते हुए बच्चे को बचा लिया। ऐसा करने में उसने अपने जीवन को खतरे में डाल लिया था।

ऐसी बहुत सी अच्छी घटनाएं हमारी समाज में

होती रहती हैं। परन्तु इससे हमें यह न समझ लेना चाहिए कि हम बहुत अच्छे बन गए हैं और हमें और अच्छा बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

यह सच्च है कि हमारे चारों ओर बहुत बुराई फैली हुई है। हमारी उन्नति की गति बहुत धीमी है। मानवीय मूल्यों को हम छोड़ते जा रहे हैं। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी समाज में कुछ अच्छे लोग भी हैं, बेशक उनकी संख्या थोड़ी ही है। हम में से जो भी चारों ओर बुराई को देखकर निराश हो जाते हैं, वह एक डायरी बना लें और उसमें अच्छे लागों की अच्छी घटनाएं लिखें। हम में से प्रत्येक एक अच्छा काम प्रतिदिन करें। बादेन पावेल (जिन्होंने "स्काउट मूवमेंण्ट" चलाई थी) प्रत्येक स्काउट लड़के से कहते थे कि वह प्रतिदिन एक सेवा का काम ज़रूर करें। इस प्रकार एक अरब अच्छी घटनाएं एक दिन में ही इकट्ठी हो जाएंगी।

यदि आपने किसी की कोई चीज़ अपहरण की हुई है, तो वह उसके असली मालिक को लौटा दें। कहीं कोई ग़लत बात हो रही है, तो वहां प्रोटैस्ट करना सीखें। सड़क पर अपनी कार चलाते हुए बाई ओर रहें, चाहे सारी सड़क खाली पड़ी हो। यदि कोई क्रोध से भरकर आप से बात करता है, तो उसको नम्र-मीठे शब्दों में उत्तर दें। जिस महकमे में आप काम करते हैं, वहां परिश्रम और ईमानदारी से काम करें। अपने किसी साथी की अज्ञानता का अनुचित लाभ न उठाएं। यह सब बात करनी आसान है और जो अन्धेरा है, वहां ध ीरे-धीरे रौशनी आ जाएगी। हम इतने गए गुज़रे नहीं है जितना कि हम अपने आपको समझ रहे हैं। बेशक हमारे चारों ओर वातावरण बहुत विरोधी और दुखदाई है परन्तु हमें आत्म-विश्वास से भरे रहना चाहिए और हमारे अन्दर जो कमियां और कमजोरियां हैं, उनका ज़िम्मेदार दूसरों को नहीं ठहराना चाहिए।

(जस्टिस जी०डी० खोसला)
के एक लेख का सराांश

शोक समाचार

बहुत ही शोक की बात है कि माननीय श्रीमान विजय कुमार अग्निहोत्री जी I.A.S. Retd. का स्वर्गवास हो गया है। वह गुरू महाराज परम पू० भगवान देवात्मा के पोते और बड़े कर्ता जी श्रद्धेय श्रीमान हरनरायण जी अग्निहोत्री जी के सपुत्र थे। आपने अपने पू० दादा जी के दर्शन किए थे। उनकी 29 अप्रैल को देहान्त के बाद आखरी रसमें भी अदा की थी। अब उनकी उमर 93 वर्ष की हो चुकी थी।

वह अपने पीछे 2 सपुत्र और दो पोते छोड़ गए हैं। आपके दोनों पुत्र आर्मी से रिटायर हुए हैं। एक पोता फौज में कमिशन्ड़ अफसर है और दूसरा डाक्टर है।

आपका दाह संस्कार चण्डीगढ़ में 29 अगस्त देव धर्म की विधि के अनुसार किया गया।

आखरी समय में वह कोठी न० 3124, सै० 21 डी, में निवास करते थे। उनके सपुत्रों के फोन नीचे लिखें हैं: -

Col. Lalit ji - 09860236325
Col. Rajiv Ji - 09818302669

दिव्या शिक्षा गुरूकुल कालिज में माता – पिता दिवस

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिव्या शिक्षा गुरूकुल कालिज में माता पिता दिवस मनाया गया। कुछ कारणों से यह निरधारित समय में नहीं मनाया जा सका था इसलिए 3 जून 2012 को कालिज के हाल में यह समागम सम्पन्न हुआ। इसके Chief Guest Dr. D.R. Vij, International President, Council of Teacher Education थे।

सर्वप्रथम प्रिंसीपल डा० सतिन्द्र ढिल्लों ने विज साहिब का स्वागत किया और उनका हाजरीन से परिचय करवाया। फिर इस विशेष दिन को मनाने का लक्ष्य बताया और इसी सन्दर्भ में उन्होंने अपने माता पिता के गुणों वा उपकारों का बहुत संक्षिप्त रूप से वर्णन किया।

उसके बाद मिसिज़ सुरजीत बराड़ कालिज की डरैक्टर ने वर्ष भर में किस प्रकार Moral Values की शिक्षा दी जाती रही है, उसका वर्णन किया कि इस पीरियड में विद्यार्थियों को बताया जाता रहा है कि हमारी हस्ती चारों जगतों अर्थात बेजान जगत, पशु जगत, वनस्पति जगत और मनुष्य जगत से है। मनुष्य जगत में हमारे माता पिता सबसे बढ़कर उपकारी हैं। इस विषय पर बहुत बार सुन्दर उदाहरणों से ब्यान किया जाता रहा, जिसके फलस्वरूप बच्चों ने दिली भावों से माता पिता के उपकारों को अनुभव किया और काफी बच्चों ने लिखकर अपने भाव प्रगट किए। यह भी बताया कि यह दिवस हमारी emotions से सम्बन्धित है, इसलिए ध्यान पूर्वक सुनने की आशा करते हैं।

उसके बाद कालिज की लड़कियों वा कुछ अध्यापिकाओं ने मिलकर "माता पिता की सेवा महसूस कर रही हूं, श्रद्धा के शुक्रिया के भावों से भर रही हूं" नामक भजन का बहुत ही सुरीली वा भावपूर्ण अवाज़ में गान किया, जिससे सारा वातावरण भाव पूर्ण हो गया। फिर एक विद्यार्थी ने बहुत ही भावपूर्ण भावों से अपने माता पिता के उपकारों का वर्णन किया, उसके ज़ार ज़ार आंसू बह रहे थे, जब उसने बताया कि किस प्रकार उसकी माता ने बुटीक खोलकर उस पर रात के 2 – 2 बजे तक काम किया और हम बहन, भाई को अच्छे स्कूल में डाला और यहां तक पढ़ाया। पिता बिमार रहने लगे, एक ओर उनको सम्भालती और दूसरी ओर आधी आधी रात तक बुटीक पर काम करती। हमारी ज़िन्दगी बनाने के लिए उन्होनें अपने सब सुख त्याग दिए, और अब तक भी कर रही हैं। लड़की इतनी भाव विभोर हो गई कि उसके आंसू नहीं थम रहे थे। उसका सारा ब्यान हाजरीन के दिलों को हिला रहा था।

फिर सरबजीत जो संगीत विद्या की अध्यापिका हैं, भावपूर्ण होकर पंजाबी का गीत गाया। "सुन्ना होईया कुल जहान मैंनू, होई सखनी प्यार दी थां मेरी, जेहड़ी शाख़ ते नाचीज़ दा आलना सी, झुला झखड़ ते टुट गई डाल मेरी"।

उसके बाद सतिन्द्र वा गुलशन ने अपने माता पिता के उपकारों के साथ साथ अपने सास ससुर के उपकारों का भी भरे दिल से ब्यान किया। सतिन्द्र ने

बताया कि बी०ए० के बाद 2 बच्चों के साथ उसके सास ससुर ने पढ़ाया है और आज वह M.A.B.Ed. हो गई है। अपने ससुर के उपकारों को याद करके वह बेबस आंसु बहा रही थी। अपनी खुशकिस्मती पर नाज़ कर रही थी कि ऐसे सास ससुर मिले और साथ ही कालिज के ऐसे वातावरण को भी धन्यवाद दे रही थी, यहां उसे अपने माता पिता और सास ससुर के उपकार नज़र आए हैं।

गुलशन ने बताया कि मेरे पिता मजदूरी करते थे। और उन्होंने ज़िन्दगी में इतनी मेहनत की है कि जिसका कर्ज़ा हम कभी अदा नहीं कर सकते। हम छ: बहन भाईयों को कड़ी मेहनत से पढ़ाया है और अब उनके पास सब कुछ है, फिर भी वह सादा रहते हैं, कोई घमंड नहीं करते, बेहद दीन हैं। वह कह रही थी जब लेबर चौक पर मजदूरों को खड़े देखती हूं तो पसीने से तर बतर पिता का वह रूप नज़र आ जाता है, कि वह भी इसी प्रकार खड़े होते थे, अब मैं स्कूटर चलाकर वहां से फराटे से गुजर जाती हूं, इस योग्य हमें उनकी कड़ी मेहनत ने बनाया हैं, वह लड़की भी आंसू बहा रही थी और ब्यान कर रही थी।

इसी प्रकार बहुत सख़्त गर्मी और समय के अभाव से 2-3 विद्यार्थी और बोले, फिर Chief Guest डा० डी०आर० विज साहिब ने अपने भाव व्यक्त किए कि मैं इस जज़बे को पैदा करने वाले को सलाम करता हूं, जिन्होंने यह रिवायत कायम की। ऐसे ग़जब के बच्चों के ब्यानों को सुनकर मेरा दिल हिल गया। उन्होंने प्रिंसीपल मैडम और Director मैडम को धन्यवाद भी दिया और मुबारकबाद दी, जिनकी efforts से यह वातावरण बन सका। उन्होंने बताया कि मैं भी घर के एक कोने में मन्दिर बनाया हुआ है, जिसमें तीन तस्वीरें हैं, एक माता की दूसरे पिता की और एक मेरे अध्यापिक की। मैं हररोज़ 2 मिन्ट सुबह घर छोड़ने से पहले उन्हें प्रणाम करके उनकी परिक्रमा करके आशीर्वाद लेता हूं। 87 वर्ष की उमर में अपने माता पिता को याद रखना बहुत अच्छे दिल की निशानी है।

इसके बाद विज साहिब के साथ एक सज्जन आए थे, वह भी खड़े होने के लिए मजबूर हो गए और फरमाया कि ऐसा Function हमने कभी किसी संस्था में नहीं देखा। मैं कोशिश करूंगा कि ऐसा Function हर कालिज में हो क्योंकि मैं कालिजों के साथ सम्बन्धित हूं।

एक और भद्र जन जो किसी कालिज के लैकचरर थे, वह बेबस खड़े हो गए कि मैं तो इतना प्रभावित हुआ हूं कि मेरा दिल भर भर कर आता था। मैं अपने प्रिंसीपल साहिब को ऐसा function रखने के लिए प्रेरित करूंगा।

इस प्रकार यह सारा प्रोग्राम बहुत ही प्रभावपूर्ण रहा और एक लड़की के पिता भी स्टेज पर आ गए और बार बार धन्यवाद करते रहे कि हमारी बच्चीयों को ऐसी शिक्षा दी गई है। यह एक निराला काम है, जो कहीं नहीं हो रहा।

इसके बाद फूलों के हारों द्वारा बच्चीयों ने अपने माता पिता का सम्मान किया, जो बहुत सुन्दर नज़ारा था।

फिर सब हाजरीन को लंच दिया गया। धन्यवाद देते हुए सब माता पिता विदा हुए।

एक हाजरीन।

श्रीमान सुशील कुमार जी चल बसे

बहुत ही शोक और दुख की बात है कि श्रीमान सुशील कुमार जी बी०ए० मैनेजर श्रीमती शुभवती जी धर्मशाला सैक्टर 18-डी, चण्डीगढ़ का अति दुखदाई देहान्त 28 जुलाई 2012 को हो गया है। वह अपनी उमर के 84 वें वर्ष में चल रहे थे। हमारी जानकारी के अनुसार उन्हें अचानक दिमागी स्ट्रोक 9 जून को हुआ। वह बेहोश हो गए और कौमा में चले गए। वह कौमा से बाहर नहीं आ सके। वह पंचकूला के प्रसिद्ध हस्पताल Alchemist में 10 जून को दाखिल करवा दिए गए। उनके नेक पुत्रों श्री प्रदीप जी, प्रवीन जी, प्रमोद जी और बेटी, बहुओं ने अपनी माता शकुन्तला जी की देख रेख में बहुत लगन और सत्कार से सेवा की। खर्च की कोई परवाह नहीं की, परन्तु शोक उस नेक आत्मा को बचाया नहीं जा सका, आखिर 28 जुलाई 2012 को हस्पताल में ही उन्होंने दम तोड़ दिया।

सन 1989-90 से ही देव धर्म मिशन की सभाएं उत्सव, महोत्सव इनकी धर्मशाला में होते रहे। बहुत ही सम्मान के योग्य परलोक वासी डा० सेवक प्रसाद जी देव धर्म के साथ तन, मन से जुड़े हुए थे। वह श्रीमान बलदेव सिंह जी सैक्रटरी देव धर्म का बहुत सन्मान करते थे और बड़े खुले दिल से देव धर्म मिशन को सहयोग देते थे। हर प्रकार की सहायता देकर खुश होते थे उनके देहान्त के बाद माननिय सुशील कुमार जी ने भी अपनी माननीय पत्नी, अपने भाई साहिबान वा ट्रस्ट के मैम्बरों की सहमती से यह सहयोग जारी रखा।

हम जहां ऋषि स्वरूप श्रीमान सीताराम के समस्त परिवार का और धर्मशाला प्रबन्ध का और श्रीमान सुशील कुमार जी का गहरे दिल से धन्यवाद करते हैं, वहां देह त्यागी आत्मा की शान्ति वा सुरक्षा की जोरदार कामना करते हैं। उनके परिवार भी जल्दी ही इस सदमें से उभर सकें।

बाबू जी की बिमारी का पता मिलने पर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अमरीका से फोन पर उनका पता किया फिर उनके देहान्त पर गहरे शोक वा हमदर्दी का इज़हार किया। चण्डीगढ़ में भी देव धर्म मिशन के ट्रस्टी विशेष कर डा० विनोद जी खेड़ा, शशी जी, जगदीष जी दाह संस्कार में और आखिरी श्रद्धांजली में शामिल हुए।

श्रीमान बलदेव सिंह जी भी अमरीका से वापिस आकर पंचकूला 823 सैक्टर 4 में अपनी पत्नी समेत गए और शोक प्रगट किया। बाबू जी के भाई साहिब के पास धर्मशाला में जाकर सवेंदना प्रगट की। सेवादार राम कुमार जी के पास भी शोक प्रगट किया।

बाबू जी की धर्म पत्नी शकुन्तला जी ने अपने भाव लिखकर दिए हैं, वह अगले अंक में देंगे। परिवार की ओर से 1100 रु० दान में दिए।

शोक और दुख के साथ

बलदेव सिंह

अन्याय और लाचारी

आज दिन पर दिन सीबीआई और न्याायपालिका सन्देह के घेरे में हैं संगीन से संगीन केसों में भी अपराधी निर्दोष घोषित की दिए जाते है। सबूत मिटा दिए जाते हैं। झूठे गवाह खड़े कर दिए जाते हैं। घूंस खिला दी जाती है। पिछले दिनों एक कालिज की प्रिंसीपल को किसी ने यह कहते हुए सुना कि कोर्ट केसों का क्या है, वहां जजों को पैसे खिलाओ और केस जीत लो। ऐसी धारणा बहुत ही ख़तरनाक है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि न्याय प्रिय, ईमानदार जज भी हैं और काफी हैं, परन्तु फिर भी हमारी न्याय पालिका दागदार हो चुकी है। आम आदमी न्याय की मांग करते करते इस दुनियां को ही अलविदा कह देते हैं। बिल्कुल झूठे केस भी लटक जाते हैं। तारीखें बढ़ा ली जाती हैं। एक कोर्ट से दूसरी कोर्ट में अपील करते करते सालों लग जाते हैं। इसलिए बिल्कुल झूठे और मक्कार लोग न्याय की खिल्ली उड़ाते रहते हैं। फिर एक और त्रासदी है। न्याय इतना मंहगा है कि आम आदमी की कमर टूट जाती है। फिर यदि किसी को किसी संस्था के विरूद्ध लड़ना पड़े, तो और भी कठिन हो जाता है क्योंकि एक व्यक्ति ने पैसे जेब से खर्चने हैं और संस्था के पैसे किसी व्यक्ति की जेब से नहीं जाते। इसलिए संस्थाओं के द्वारा लड़ने वाले धड़ल्ले से केसों को खींचते हैं ताकि व्यक्ति विशेष का मनोबल टूट जाए। ऐसा ही केस 19 साल से रूचिका गिरहोत्रा का चल रहा है।

रूचिका गिरहोत्रा का मामला पहले ही हमारी न्याय व्यवस्था पर एक संगीन सवाल बन गया था। उन्नीस साल पहले एक बड़े पुलिस अधिकारी द्वारा कथित यौन दुर्व्यवहार के बाद आत्महत्या कर लेने वाली इस नाबालिग लड़की के पिता को अब जिस तरह उसी से संबंधित मामले में सीबीआई की क्लोजर रिपोर्ट पर सहमति जतानी पड़ी है, उसने आपराधिक जांच और अभियोग के हमारे तंत्र को और भी गंभीर सवालों के घेरे में ला खड़ा किया है। आरोप है कि रूचिका की आत्महत्या के बाद उसके पिता का दस्तखत एक सादे कागज पर लिया गया जिसका पोस्टमार्टम प्रक्रिया के दौरान मामले पर लीपापोती के लिए अनुचित ढंग से उपयोग किया गया। इल्जाम यह भी है कि रूचिका के परिवार का मनोबल तोड़ने के लिए उसके भाई को पुलिस ने ऑटो चोरी के एक फर्जी मामले में फंसा दिया, ताकि आरोपी भूतपूर्व पुलिस अफसर एसपीएस राठौर को बचाया जा सके। दोनों आरोपों की जांच सीबीआई ने की ओर उसे इनमें कोई सबूत नहीं मिला। उसने कोर्ट में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल कर दी। रूचिका के पिता ने क्लोजर रिपोर्ट पर अपनी सहमति दे दी है, लेकिन तमाम परिस्थितियां इशारा करती हैं कि यह एक बुजुर्ग व्यक्ति का हताश दिल है। दरअसल, यह मामला इस मुकाम तक आ सका तो इसका श्रेय रूचिका के साथ यौन दुर्व्यवहार की गवाह आराधना के माता पिता आनंद प्रकाश और मधु का इंसाफ के लिए अथक संघर्ष है। आनंद प्रकाश ने मीडिया को बताया कि रूचिका के पिता ने क्लोजर रिपोर्ट पर सहमति देने के पहले उनसे कहा था कि वे अंनतकाल तक व्यवस्था से लड़ते नहीं रह सकते। प्रकाश का आरोप है कि सीबीआई इस मामले में पूरी तरह अभियुक्त के साथ है। अगर ऐसी धारणा बने, तो पीड़ित पक्ष का लाचार महसूस करने लगना स्वाभाविक ही होगा। यह प्रकरण इस केंद्रीय जांच एजेंसी को कठघरे में खड़ा करता है। एक बहुचर्चित मामले का, जिसमें मीडिया ने भी इंसाफ के लिए उत्साह से अभियान चलाया हो, अगर यह हश्र हो, तो उससे हमारी व्यवस्था में न्याय की संभावनाओं का अंत होना अस्वाभाविक नहीं हैं।

(सुरजीत बराड़)

बचें गुस्से के दुष्प्रभाव से

गुस्सा हम सब को आता है। किसी किसी की तो नाक पर ही गुस्सा होता है। मक्खी भले ही नाक पर न बैठने दें, लेकिन गुस्सा नाक पर बैठ ही जाता है। विदेशों में तो बाकायदा ऐंगर मैनेजमैंट का चलन आम है। लेकिन हमारे यहां बीमारी के प्रबंध का शायद ही कोई इंतजाम हो, जबकि इस बीमारी से कम वा ज्यादा हर कोई पीड़ित है। हरेक के मन में कहीं न कहीं गुस्सा छिपा होता हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि कोई गुस्से का इजहार कर देता है तो कोई मन ही मन उसे हजम करने की कोशिश करता है। यह और बात है कि गुस्सा किसी और बहाने से बाहर निकल आता है।

गुस्से के दुष्प्रभाव बहुत हैं। घर में गुस्सा दिखाया नहीं कि पूरा माहौल अशांत हो जाता है। यारदोस्तों पर गुस्सा किया नहीं कि बदले में मिलेगी उपेक्षा। दफ्तर में किया गुस्सा, तो हो सकता है मानसिक अशांति का कारण बन जाए। इस से पूरा का पूरा कैरियर ही खराब हो सकता है। कुल मिला कर गुस्सा वह चीज है जो जिंदगी की सुखशांति को बरबाद कर सकता है।

इस के अलावा गुस्से के और भी दुष्प्रभाव हैं। आइए, पहले इन की चर्चा कर ली जाए।

* कई मानसिक बीमारियों की जड़ यह गुस्सा ही है।
* गुस्से के कारण हताशा, अभिमान और उपेक्षा की भावना मन में घर कर जाती हैं। ऐसे लोगों में धीरे धीरे जीवन के प्रति आकर्षण कम होने लगता है और वे अवसाद से पीड़ित हो जाते हैं।
* मानसिक अशांति के कारण इनसान अपना और अपनी सेहत का खयाल नहीं रख पाता। इस से वह अलग अलग तरह के संक्रमण का शिकार हो जाता है।
* गुस्सैल इनसान आमतौर पर दुबलापतला होता है। क्रोध कर के वह अपना खून जलाता है। उच्च रक्तचाप का शिकार होने का भी खतरा होता है।
* क्रोध करने पर हमारे शरीर में एक खास तरह का हारमोन स्रावित होता है। ऐसे हारमोन शरीर को कई तरह से नुकसान पहुंचाते हैं। यहां तक कि इस हारमोन से दिल की बीमारी का भी अंदेशा रहता हैं।
* दफ्तर में प्रतिकूल परिस्थिति पैदा होने से कामकाज का माहौल बिगड़ जाता है। अनजाने में गलतियां हो सकती हैं। जिस का खमियाजा भुगतना पड़ सकता है।
* सहयोगियों की नाराजगी के कारण शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो जाती है।
* रिश्तों में दरार का कारण बन सकता है क्रोध से हो सकता है हमेशा के लिए संबंध टूट जाए।
* इन्हीं दुष्प्रभावों के चलते गुस्से से अपना दामन हर कोई छुड़ाना चाहता है। वैसे, आज के सभ्य समाज में गुस्सा का किसी भी तरह से जाहिर होना असभ्यता माना जाता है।

आईए, इस समस्या से पीछा छुड़ाने के कुछ उपाय जानते हैं।

पहले तो आप यह देखो कि गुस्सा है क्या चीज? मनोरोगचिकित्सक डा॰ नमिता दास का कहना है, "हम सब के मन में कमोबेश आक्रामकता होती है। किसीकिसी में यह आक्रामकता चरम पर पहुंचने के बाद प्रतिशोध ले कर ही शांत होती हैं। किसी किसी में चीखनेचिल्लाने से आक्रामकता जाहिर व शांत होती है। ऐसे मे कहा जा सकता है कि मुस्सा हमारे भीतर की इस आक्रामकता का आवेगजनित प्रकट रूप है।"

कुछ लोग गुस्से को पी जाने का भी माद्दा रखते हैं। समाज में इसे प्रशंसा की नजर से देखा जाता है लेकिन नमिता दास का कहना है, "गुस्से को दबा कर ठंडे दिमाग से काम लेना प्रशंसनीय जरूर है लेकिन इस का नतीजा और भी खराब हो सकता है। इस से मन मे हताशा, निराशा, मायूसी, उदासी घर करने लगती है। इसीलिए गुस्से को दबाए रखना समस्या का कोई समाधान नहीं। गुस्से की प्रवृति को जड़ से काट देना ही समस्या का सही समाधान होगा।"

सवाल है, क्रोध या गुस्से का लक्षण क्या है?

* पर निंदा यानी दूसरों की बुराई करने से ले कर ईर्ष्याजनित कोई कार्यवाही।
* आंखों में आंखें डाल कर बात न करना।
* वादा कर के न निभाना।
* किसी पर झूठा आरोप लगाना।
* बेवजह किसी को नाराज कर खुश होना।
* दूसरों के कामों में मीनमेख निकालना।
* बेखयाल रहना, बनावटी और उग्र स्वभाव।
* नकारात्मक टिप्पणी करना।
* धमकी देना, किसी चीज को उठा कर फेंक देना, तोड़ देना।
* अपनी गलती दूसरों के सिर मढ़ देना।
* गड़बड़ी होने पर खुद को निर्दोष साबित करना।

ये सभी लक्षण जिस किसी में हैं वह गुस्से का मरीज हैं। गुस्से से नजात पाना जरूरी है, कैसे?

* गुस्से पर काबू बाने के लिए हमारे यहां सदियों से गिनती गिनने की परंपरा रही हैं, 1 से ले कर 20 तक गिनती गिनने पर गुस्सा शांत हो जाता है।
* इस पर भी अगर लगे कि चिंता बढ़ रही है तो वापस मन वहां से हटा लें और शांतचित मनपसंद संगीत सुनें या कामेडी फिल्म देखें।
* मन को सब ठीक होने का दिलासा दें, "औल इज वेल।"।
* बातचीत से हर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। गुस्सा आने पर जरूरी है कि शांत मन से बातचीत के जरिए उन मुद्दों पर बात की जाए।
* अपने आप को चुनौती दें। प्रचंड गुस्से में खुद को शांत रखने की चुनौती। अगर एक बार इस में सफल हो गए तो समझ में आ जाएगा कि यह चनौती भरे काम की सफलता आप को कहां से कहां पहुंचाने का मादा रखती है।

फिर देर किस बात की। उपरोक्त को आजमाने की कोशिश करें। देखिए, कैसे आप का जीवन खुशगवार हो गया है और सफलता आप के कदम चूमने को बेक़रार है।

पृष्ट 13 का बाकी

Published on 5th of the month
20
सितम्बर - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जानकर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 14 सितम्बर से 16 सितम्बर 2012 तक कल्याण जिला भटिंडा में चाव भाव से मनाया जा रहा है। इस मुबारक उत्सव से पहले चन्द दिन का खास सत्संग रखा जा रहा है। 14 सितम्बर की शाम 5.00 बजे सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा होगी।

आपकी सेवा में विनम्र प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं इस शुभ अवसर से लाभ उठावें बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी साथ लावें।

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh-160 022
Phone : 0172-2716914

सम्मान भाव से प्रार्थी
बलदेव सिंह (मंत्री)

प्रोग्राम

14 सितम्बर शुक्रवार

प्रवेश सभा : 5:00 बजे शाम
विषय : सत्य धर्म की विशेषता।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

15 सितम्बर शनिवार

पहली सभा : 9.00 बजे सुबह
विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।
दूसरी सभा : 11:00 बजे
विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।
तीसरी सभा : 5.00 बजे
विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

16 सितम्बर इतवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह
विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज,
इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।
दूसरी सभा : 10.00 बजे
विषय : सभाओं से उठाए हुए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts